

Chhatrashakti

THE PREMIER STUDENT MAGAZINE

18

छात्रशक्ति

JUNE - 1998



❁ पोखरण के बाद... स्वदेशी

❁ गौरवशाली अर्ध शताब्दी

❁ Titanic creates Cinematic History

स्वदेशी ही होगा आर्थिक प्रतिबंधों का जवाब

परमाणु परीक्षणों से उत्पन्न स्वावलंबन एवं स्वदेशी तकनीक के विचार का स्वावलंबन और स्वदेशी पूंजी तक विस्तार किया जाना चाहिए था। अमरीका, जापान और जर्मनी सहित अन्य देशों ने जो आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं उनसे हमें लगभग 16 अरब डॉलर का नुकसान होगा किंतु इसके मुकाबले हमारी सकल घरेलू बचत से होनेवाला पूंजी निर्माण करीब 70 अरब डॉलर है। अतः अमरीकी आर्थिक प्रतिबंधों का मुकाबला करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लाबिंग पर आधारित विदेशी उपक्रम नहीं, बचत सादगी वित्तीय अनुशासन और सही योजना का स्वदेशी उपक्रम रचना ही परमाणु परीक्षणों की सफलता को बरकरार रख सकेगा।

परमाणु परीक्षणों के पश्चात् भारत पर लगे आर्थिक प्रतिबंधों के देश की अर्थव्यवस्था पर क्या-क्या प्रभाव होंगे यह तो भविष्य बतलाएगा। किंतु आर्थिक प्रतिबंधों की घोषणा के पश्चात् जहां एक तरफ देश की आम जनता इनसे निपट लेने की इच्छुक है वहीं दूसरी तरफ सरकारी स्तर पर होने वाले प्रयास कोई आशा नहीं जगाते। इस समय सरकार की नीतियों को तय करने वाले आर्थिक प्रतिबंधों से जुड़ने के जो उपाय मुझा रहे हैं वे स्वाभिमान, स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता के उस दर्प को चूर कर रहे हैं जो 11 और 13 मई को पोखरण में प्रकटित हुआ था। वस्तुतः परमाणु क्षेत्र में लगाई यह लम्बी छलांग समूचे राष्ट्र जीवन को स्वावलम्बी बनाने की छलांग हो सकती थी। परन्तु पिछले कुछ दिनों की घटनाएं बतलाती हैं कि जिस स्वदेशी तकनीकी कौशल का डंका पीटा गया है सरकार उसे हर क्षेत्र में दोहराने का साहस नहीं रखती।

जिस तरह सरकारी तंत्र के भीतर से यह आवाज उठ रही है कि भारत, अमरीका में अपनी लाबिंग के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों का सहयोग ले वह स्वावलंबन की उस लम्बी छलांग को कहीं अधूरा बना देती है। 13 मई को दो और परमाणु परीक्षणों के पश्चात् आर्थिक प्रतिबंधों का समाचार साथ-

साथ ही आया था। उस समय देश भर में आम आदमी से लेकर प्रबुद्ध वर्ग तक सभी में इस चुनौति को स्वीकारने का भाव बलवती था। उस दिन टीवी, रेडियो और समानारपत्रों में आई जनता की प्रतिक्रियाएं उसमें जागे देशभक्ति के भाव का परिचय दे रही थी। लोग अमरीका की दादागिरी को मुँहतोड़ जवाब देने के मूड में थे। वे देश के परमाणु शक्ति संपन्न बनने, राष्ट्रीय सुरक्षा में स्वावलंबी होने और परमाणु तकनीक पर काबिज पांच देशों के वर्चस्व को तोड़ने के बदले भारी मूल्य चुकाने के लिए भावात्मक तौर तैयार दिखे थे। किंतु सरकार द्वारा संघर्ष, त्याग और राष्ट्रभक्ति के इस भाव को तोस रूप देने में विफल रहने पर यह भाव आज कमजोर हुआ है। हो सकता है यहां कुछ लोग प्रश्न करें कि ऐसी अपेक्षा सरकार से क्यों की जाए? तो इसका एक ही उत्तर है कि आर्थिक प्रतिबंधों से जुड़ने के लिए सरकार कौन सा मार्ग चुनती है यह ज्यादा महत्वपूर्ण है और उसी से आगामी रणनीति का निर्धारण होगा। सरकार स्वाभिमान, स्वावलंबन और स्वदेशी के संकल्प को मूर्तरूप देनेवाले मार्ग पर भी चल सकती थी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को खुश करके उन्हें अपनी लाबिंग करने, उनके प्रभाव से आर्थिक प्रतिबंध नरम करने और

इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत में मुक्त निवेश के अवसर देकर उन्हें अपने पक्ष में करने का उदारीकरणवादी मार्ग भी। यह एक क्षेत्र में आत्मनिर्भर होकर दूसरे क्षेत्र में परनिर्भर होने जैसी बात ही है। सरकार के नीति निर्धारकों को शायद इस मार्ग पर चलना सुविधाजनक लग रहा है। इसका ही प्रमाण है कि 15 मई को केंद्र सरकार ने तेल की खोज के प्रयासों में विदेशी कंपनियों खासकर ग्यारह अमरीकी कंपनियों के साथ करार करने का फैसला किया है। इसी तरह खनिज उत्खनन के क्षेत्र में भी विदेशी कंपनियों को उदारतापूर्वक अनुबंध सौंपने का निर्णय हुआ है। दूसरी तरफ सरकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रति वैसे भी उदारता से पेश आएगी यह संकेत भी लगातार दिए जा रहा है। यह सभी संकेत प्रतिबंधों का मुकाबला करने के लिए आवश्यक राष्ट्रीय संकल्प को पंगु बनाते हैं।

विदेशी आर्थिक प्रतिबंधों का मुकाबला करने के लिए अगर विदेशी सहायता ही लेनी है तो फिर जिस स्वावलंबन को परमाणु परीक्षणों से पा लेने की दुहाई दी गई, जिसे इतना प्रचारित किया गया उसका क्या होगा? मिडीया और सत्ता के गलियारों में इस बात की चर्चा होना कि अमरीकी रुख को बहुराष्ट्रीय कंपनियां बदल सकती हैं मूलतः स्वावलंबन की अबाधारणा के ही विरुद्ध है। स्वावलंबन के स्वाभिमान का मान अगर बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने ही बनाना है तो फिर परमाणु परीक्षणों की सफलता कहीं अपनी चमक और धार खो बैठती है। यह सफलता के आनंद को भी कम करती है। आज की स्थिति में अमरीकी बहुराष्ट्रीय कंपनियां हमारे हितैषी बनने का स्वांग भी रच रही हैं। वे आर्थिक प्रतिबंधों का

(पृष्ठ क्र. 9 पर)

Editorial.....

Cover Page :

National General Secretary Shri Mahendra Kumar speaking in public function held during National Executive Council Meeting of A.B.V.P. at Calcutta. Seating on stage City President Dr. Indranil Basu and National Secretary Shri Amitav Chakravorty.

Editorial Desk

V. Muraleedharan
Sharadmani Marathe
V. Sangeetha
Prachi Moghe
Shreerang Kulkarni

As campuses start busling with life, we come back to you with a fresh issue of Chhatrashakti. We wish you the very best in your studies and your extra curricular activities. Mother Nature does not apparently wish us her very best.

The devastating cyclone hitting the Gujarat coast and parts of Rajasthan and the heat wave across the northern and eastern plains has left thousands dead in its wake. These seem trying times for the country. We urge the students of these and other areas to contribute their little mite in mitigating the sorrows of those hit by the fury of mother Nature. Our countrymen have always shown rare resilience in facing natural disasters. The coming months may offer us several opportunities of displaying such resilience, not against natural disasters but against double standards used by industrial countries in imposing sanctions against India.

The very idea that possession of nuclear weapons can be a privilege of a few countries is against even basic principles of fairness and equality. What is worse is these very nations, possessing nuclear warheads in thousands, sermonising and admonishing India for having conducted nuclear tests.

We heartily congratulate the government for having taken such a bold step in face of stiff international opposition. After years of burying its head in the sand, India has finally taken the much needed step to deter its enemies from menacing the integrity of its borders. You make us proud, Atalji. Needless to say the student as a citizen of this country is willing to face all trials and tribulations to protect the dignity of his beloved nation.

We expect however that the rich nuclear powers will soon realise the hypocrisy of their doublespeak and the uselessness of imposing sanctions on - a country the size of India. Tests conducted by India were no one upmanship game but a sheer necessity if it has to protect its borders. That we as a nation are ultimately committed to the total elimination of nuclear weapons from the face of this earth needs no reiteration. That can however be achieved only by an across-the-table approach and not by bullying.

Let us hope the G - 8 see sense soon and the world becomes a safer place to live. Till then all our efforts will be to make this nation tall and strong.

So long friends, and good luck for the year.

आवश्यकतानुसार जनजागरण एवं आंदोलन निर्माण करने के स्तरों में व्यस्त हुई।

गृहनिर्माण में विद्यार्थी परिषद के उपरोक्त योगदान के अतिरिक्त सबसे बड़ा व मौलिक योगदान रहा उसके इस वैचारिक प्रतिपादन में कि 'विद्यार्थी कल का नहीं आज का नागरिक' है। अनेक वर्षों के अपने अनुभवों एवं अध्ययन तथा विश्व के विभिन्न भागों एवं भारत की छात्र-युवा गतिविधियों की सीमांसा के आधार पर 1970 के दशक के शरभ में अभाविप ने उपरोक्त प्रतिपादन किया। विद्यार्थी परिषद ने कहा कि 'आज के नागरिक' के तौर पर संगठित छात्र शक्ति ने विश्व के अनेक देशों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और भारत में भी वह यह भूमिका निभा सकती है। परिषद का यह प्रतिपादन शीघ्र ही व्यवहार रूप में प्रकट हुआ।

1973 के अंत में गुजरात में 'नव निर्माण आंदोलन' प्रारंभ हुआ। एक इंजिनियरिंग कॉलेज के छात्रावास में की गई शुल्क वृद्धि के विरुद्ध प्रारंभ हुआ आंदोलन में महंगाई, भ्रष्टाचार व कुशासन के विरुद्ध प्रदेश व्यापी आंदोलन बन गया जिसका नेतृत्व विद्यार्थियों ने किया। यह आंदोलन प्रारंभिक दौर में स्वयं स्फूर्त था परंतु इसे व्यापक, प्रभावी स्वरूप विद्यार्थी परिषद के प्रयत्नों से मिला। गुजरात के पश्चात् कुछ महिनों में ही फरवरी-मार्च 1974 में 'बिहार आंदोलन' प्रारंभ हो गया। महंगाई, भ्रष्टाचार, कुशासन, बेरोजगारी, कुशिक्षा आदि के विरोध में यह आंदोलन अभाविप के प्रयासों से ही शुरू हुआ। यही आंदोलन आगे चल कर राष्ट्रीय आंदोलन में परिवर्तित हो गया और बाबू जयप्रकाश नारायण के सक्रिय सहभाग व नेतृत्व के कारण 'जयप्रकाश नारायण आंदोलन' कहलाया। 1979 से 1985 तक असम में बंगला देशी मुसपैठ के विरुद्ध चले 'असम आंदोलन' को एक प्रादेशिक दायरे से निकालकर राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का श्रेय भी अभाविप को जाता है।

उपरोक्त तीनों आंदोलन स्वाधीन भारत के सबसे बड़े छात्र आंदोलन थे और तीनों

में विद्यार्थी परिषद का 'छात्र आज के नागरिक' का प्रतिपादन मूर्तरूप में दिखाई दिया और तीनों में विद्यार्थी परिषद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 'विद्यार्थी परिषद की यह ऐतिहासिक भूमिका स्वर्णिम पृष्ठों में लिखी जाने योग्य है।

समय समय पर आयोजित की गई अपनी अनेकविध गतिविधियां तथा विभिन्न शैक्षिक, राष्ट्रीय व सामाजिक विषयों के संबंध में व्यक्त किये गए विचारों व निभाई गई भूमिका के माध्यम से अभाविप ने गत 50 वर्षों में राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण कार्य में अपना ठोस योगदान किया है। विद्यार्थी परिषद को अपने इस योगदान पर गर्व है। यदि सारे योगदान में सबसे प्रमुख योगदान का उल्लेख करना हो तो वह है 'छात्र आज का नागरिक है' दर्शन की खोज। इस खोज के द्वारा अभाविप ने यह रेखांकित किया है कि विभिन्न राष्ट्रीय, सामाजिक परिस्थितियों में वांछनीय जनमत तैयार करने, आंदोलन निर्माण करने अथवा परिवर्तन लाने में विद्यार्थी समुदाय की संगठित शक्ति उत्प्रेरक अथवा अग्रसर की भूमिका निभाने की क्षमता रखती है। अभाविप की इस खोज ने विद्यार्थी जगत एवं विद्यार्थी संगठनों को राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन में सार्थक एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के मार्ग पर चलने का प्रयास कर ही रही है।

आज जब विद्यार्थी परिषद अपनी स्वर्ण जयंती मनाने जा रही है तब उसके सम्मुख सार्थक शिक्षा, मार्गजनिक जीवन में शुचिता, चुनाव सुधार, व्यवस्था परिवर्तन, आर्थिक स्वाधीनता, सामाजिक समरसता, व राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे ज्वलंत मुद्दे उपस्थित हैं जिनके विषय में आवश्यकतानुसार जनजागरण, आम सहमति व जनआंदोलन निर्माण करने की आवश्यकता दिखाई देती है। संभवतः इन मुद्दों के संदर्भ में अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में अभाविप कोई खाका तैयार करेगी।

- प्रा. राजकुमार भाटिया

महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं : डा. गार्गी

झांसी में महिला दिन (8 मार्च) की पूर्व संध्या पर अ.भा.वि.प. छात्रा इकाई द्वारा विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की कुलपति डा. गार्गी ने कहा कि महिलाएँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। हर क्षेत्र में महिलाओं ने पुरुषों के समान बड़ चढ़कर हिस्सा लिया है। इसलिए महिलाओं के बजुद को सदैव याद रखना होगा। लड़कियों की गुणवत्ता लड़कों की तुलना में ज्यादा है।

नगरपालिका पार्षद आशा सेठ ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि महिलाएँ शक्तिशाली हैं, इसका आभास उन्हें होना चाहिए। उनकी शक्ति का एहसास कराने की जिम्मेदारी छात्राओं पर सौंपी है।

मुख्य वक्ता सुश्री सरोज मिश्रा ने कहा कि महिलाओं की शक्ति सदैव पूजी जाती रही है। बुंदेलखंड महाविद्यालय के प्रान्य डा. एस. पी. पाठक ने कहा कि महिलाओं ने हर मोड़ पर पुरुषों के समान योगदान दिया है। स्त्री के बिना पुरुष को पूर्ण नहीं माना जाता है। लड़कियों को अपने पैरों पर खड़ा होने की दिशा में सतत प्रयास करना चाहिए।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की छात्रा इकाई की प्रांतीय उपाध्यक्षा डा. रेनु माधुर ने कहा कि पुरुष एवं महिलाएँ समाज को चलानेवाले दो पहिए हैं। दोनों एक दूसरे के बिना अधुरे हैं। भारत में नारियों के महत्व की परंपरा को जगाने के लिए 'महिला दिवस' मनाना पड़ता है। अंतर्गतता तथा बाह्यगतता का विकास करना हमारा लक्ष्य है। अगर हम ऐसा कर सके तो महिला दिवस का आयोजन सफल हो सकेगा।

EDUCATIONISTS OPPOSE AUTONOMOUS MEDICAL UNIVERSITY



Mumbai University Vice Chancellor Dr. Snehlata Deshmukh inaugurating the seminar with her seen Shri Naredra Pawar, Maharashtra State Secretary, and Dr. Kailas Sonmankar, Convenor of the Seminar.

A seminar was recently held by the TSVP (Tantra Shikshan Vidhyarthi Parishad) on 14th April 1998 to discuss various issues relating to the setting up of an autonomous 'Medical University' at Nasik. The seminar held in the Convocation Hall of Mumbai University was attended by several leading educationists, medical students, lecturers and officers of the Health Department.

Dr. Snehlata Deshmukh, the Vice-Chancellor of Mumbai University inaugurated the day-long seminar. In her address, Dr. Deshmukh spoke about the need to make the medical students more socially responsible and to adopt a pro-active approach to the problems of society. Suggesting the need to incorporate

some changes in the education policy of 1990 and the University laws of 1994, she drew attention to the fact that burning social problems like AIDS should be made a part of the medical curriculum.

The seminar was divided into three sessions namely-

Medical University : Extent and scope

Administration and Examination Structure

Policy on Research and Development.

It was suggested in the seminar that the role of the proposed University should not be limited to an 'Exam-conducting body' and efforts should be made to encourage research and raise the standard of education imparted to the students.

It was also felt that medical education should be decentralized and more emphasis should be given to creation of Campus University.

The Seminar was summed-up by TSVP state convenor Dr. Kailas Sonmankar who expressed the view that this seminar has started a thought process among educationists regarding the proposed University. Expressing the general sentiment of the discussion in the seminar, he said that the implementation of the decision by the State Government should be carried out only after taking the professors, educational experts and the student community into confidence. Hasty decisions may jeopardize the future of medical education in the state.

With Best Compliments from



G. S. Tahiliani

Chairman



PANCHRATNA TRADERS PVT. LTD.

Ph. No. 4126572 / 4111583

(पृष्ठ क्र. 2 से आगे)

राजायज लाभ उठाने के लिए यह प्रभावित कर रही है कि वे अमरीकी प्रतिबंधों को हटवाकर भारत का भला कर रही है। पता नहीं यह चर्चा कहां से शुरू हुई कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां अमरीका के रुख को बदलने में सक्षम हैं। यह सच है कि यूरोप और अमरीका में सरकारों के आर्थिक, कूटनीतिक और यहां तक कि सामरिक निर्णयों तक को शक्तिशाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां प्रभावित करने का दम रखती हैं। फिर भारत में अमरीकी कंपनियां अपने बाजार की रक्षा करने के लिए अगर कुछ ज्यादा ही दम लगाएं तो यह स्वाभाविक है। आखिर, भारत पर अमरीकी आर्थिक प्रतिबंधों की प्रतिक्रिया में उन्हें ही नुकसान होने की आशंका है। वे तो अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए भारतीय हित की बात करेंगी। परंतु यह तो हमें ही सोचना है कि क्या स्वावलंबन की बात करने वालों को अमरीकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बैसाखी लेनी है या नहीं? निश्चित रूप से बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपना पक्षधर बनाने और उनकी

सहायता से आर्थिक प्रतिबंधों के पार पाने की चर्चा खड़ी करना कहीं न कहीं षडयंत्र की बू देता है।

परमाणु परीक्षणों से उत्पन्न स्वावलंबन एवं स्वदेशी तकसोक के विचार का स्वावलंबन और स्वदेशी पूंजी तक विस्तार किया जाना चाहिए था। अमरीका, जापान और जर्मनी सहित अन्य देशों ने जो आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं उनसे हमें लगभग 16 अरब डॉलर का नुकसान होगा किन्तु इसके मुकाबले हमारी सकल घरेलू वचत से होने वाला पूंजी निर्माण करीब 70 अरब डॉलर है। अतः अमरीकी आर्थिक प्रतिबंधों का मुकाबला करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लाबिंग पर आधारित विदेशी उपक्रम नहीं, वचत, सादगी, वित्तीय अनुशासन और सही योजना का स्वदेशी उपक्रम रचना ही परमाणु परीक्षणों की सफलता को बरकरार रख सकेगा।

फिर जो अमरीकी कंपनियों की लाबिंग के सहारे एक खतरा तो हमेशा ही है कि

अगर कभी उन्होंने अमरीका और भारत सरकार के बीच समझौता करवाने के लिए सीटीबीटी पर हस्ताक्षर करने के लिए प्रचारात्मक दबाव बनाना शुरू किया तो भारत का वर्तमान राष्ट्रीय दर्प कहां का रहेगा? ये कंपनियां कितनी भी बहुराष्ट्रीय क्यों न हों इनके कितने ही आर्थिक हित भारत में क्यों न हों आखिरकार यह रहंजी तो अमरीकी कंपनियां ही। इस बात की क्या गारंटी है कि यह कंपनियां कभी अमरीकी सामरिक हितों की पोषक बनकर भारत में ही अपने प्रभाव की उलट लाबिंग शुरू नहीं करेंगी? क्या अफ्रीकी और दक्षिण अमरीकी देशों में अमरीकी कंपनियों द्वारा की गई राजनीतिक, कूटनीतिक व सामरिक प्रभाव वाली गतिविधियां भारत को कोई सीख नहीं देती? क्या अमरीकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लाबिंग पर 'गर्व' करने वाले परावलम्बी बुद्धिजन इन कंपनियों का इतिहास देखने का कष्ट करेंगे? जिस तरह से अमरीका भारत पर सीटीबीटी के लिए दबाव ला रहा

With Best Compliments from



SHRI ARVINDBHAI MANIAR

DRUG BANK

H.J.Doshi Hospital Sankul
Malaviya Nagar, Gondal Road, RAJKOT-360 004.
Tel. : 60531, 88994-96

है वह उसे अमरीका प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाता जा रहा है। जिस तरह आर्थिक प्रतिबंधों के विफल रहने के संकेत मिले हैं और जिस तरह समूह आठ में भी अमरीका अकेला पड़ गया है वह उसकी खीज को बढ़ाएगा। ऐसे में सीटीबीटी पर भारत के हस्ताक्षरों का मुद्दा बना कर अमरीका भारत को परेशान करने के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपना ले तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

अमरीका वास्तव में धूर्तता का जीवंत प्रतीक है। एक तरफ वह अगर भारत पर परमाणु परीक्षणों को लेकर प्रतिबंध लगा रहा है तो दूसरी तरफ खुद वह नित नए-नए परमाणु अस्त्र आज भी विकसित कर रहा है। आज भी अमरीका प्रतिवर्ष 4 बिलियन डॉलर की रकम परमाणु अस्त्रों के विकास और आधुनिकीकरण पर खर्च कर रहा है। पिछले वर्ष के अंत में ही अमरीका ने बी 61-11 नामक पृथ्वी में घुस जाने वाले शक्तिशाली और अति संहारक क्षमता वाले परमाणु अस्त्र का परीक्षण करके उसे

तैनात भी कर दिया है। यह विनाशकारी परमाणु अस्त्र अमरीका इराक के विरुद्ध प्रयोग करने वाला था। अस्तु, ऐसे भयंकर नरिख वाले अमरीका की कंपनियों पर निर्भर रहना और उनकी लाशिंग पर विश्वास करना आत्मघाती तो होगा ही, यह अपमानजनक भी है।

वास्तव में भारत की संप्रभुता को रूपां तोलने वाले अमीर देशों के प्रतिबंधों के उत्तर हमारे घर में ही है। घरेलू पूंजी निर्माण हेतु अधिकाधिक बचत के लिए जनता को प्रोत्साहित करने और आयात होने वाले वस्तुओं खासकर पेट्रोलियम पदार्थों की खपत घटाने और राष्ट्रीय स्वावलंबन और स्वाभिमान की रक्षा के लिए कुछ कष्ट और असुविधाएं भी सहने के भाव का जागरण - यही आर्थिक प्रतिबंधों का स्वदेशी और स्वाभिमान उत्तर है। गैर जरूरी उपभोक्ता वस्तुओं के उपयोग को हतोत्साहित करके खासकर आर्थिक प्रतिबंध लगाने वाले देशों की उपभोक्ता वस्तुएं बनाने वाली कंपनियों

की वस्तुओं का बहिष्कार हमारी बचत को बढ़ाएगा।

सादगीपूर्वक बचत करते हुए अगर हम विदेशी मुद्रा खर्च करके आयात होने वाले पेट्रोलियम पदार्थों की खपत पॉन प्रतिशत भी घटा ले तो यह राष्ट्र को स्वावलंबी बनाने की दिशा में एक लंबी छलांग होगी। फिर जिस तरह पोखरण में परमाणु परीक्षणों के पश्चात् प्रत्येक स्वाभिमानी भारतीय का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया है - आर्थिक स्वावलंबन से प्रतिबंधों को दिया गया करारा जवाब जो ऊर्जा पैदा करेगा वह भारत के नाम और स्थान और भी ऊर्जस्वित करेगा। अनिवार्य भारतीय लार्ड स्वराजपाल का यह कथन की पश्चिमी राष्टों द्वारा भारत पर लगाए आर्थिक प्रतिबंध वरदान साबित होंगे और भारत आत्मनिर्भर हो सकेगा आखिर हमारे योजनाकारों और अफसरशाही में बैठे उदारीकरण एवं भूमंडलीकरणवादी भारतीयों के मन में क्यों नहीं चुभे?

- उमेश दत्त

(सौजन्य स्वदेशी पत्रिका)

"CO-OPERATION FOR WELFARE OF SOCIETY"

THE JANATA SAHAKARI BANK LTD., KALYAN

Head Office - 'Niharika' Near Ice Factory, Station Road, Kalyan (W), Tel.: 324994/325582 Fax.: 320963

BRANCHES:

Main Branch (Tilak Chowk) Ulhasnagar Branch Rambaug Branch Adharwadi Branch Netivali Branch Kolsewadi Branch Bail Bazar Branch Wada Branch Kala Talav Branch Syndicate Branch Murbad Branch

HIGHLIGHTS:

Rs. 1,00,000/- insured under Deposit Insurance Scheme.

Our Main, Rambaug, Kolsewadi, Syndicate, Kala Talav, Netivali, Ulhasnagar Branches are computerized.

Half hour additional service in Computerized Branches.

Lockers are available in Main, Rambaug, Kala Talav, Syndicate Branches.

Mr. W. D. Sathe

Chairman

Dr. P. V. Karkhanis

Vice-Chairman

Mr. P. V. Gogate

General Manager

BOARD : Mr. M. S. Agharkar, Mr. L. S. Upadhyay, Mr. S. T. Phanse, Adv. Shri. D. D. Kodare, Chan. A. P. Pradhan, Prof. (Dr.) V. D. Kane, Mr. A. D. Kadam, Mrs. M. K. Deshpande, Mr. K. R. Wadu, Mrs. P. V. Biwalkar, Mrs. (Dr.) L. L. Katkar.

Mr. Sudhakar Hampihallikar (Advisor to Board)

Mr. A. N. Khirwadkar

Asst. General Manager

Mr. V. M. Shirvalkar

Asst. General Manager.

उत्तर प्रदेश में परमशिवमजी के हत्या के विरोध में प्रदर्शन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद उत्तर प्रदेश (काशी, अवध, ब्रज व मेरठ) द्वारा तमिलनाडु में परिषद के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. आर. परम-शिवम की हत्या के विरोध में तमिलनाडु की द्रमुक सरकार को बर्खास्त करने की मांग की गई तथा सभी प्रमुख केंद्रों सहित जिला केंद्रों पर विरोध प्रदर्शन, सभा, पुतला दहन आदि किया गया।

प्रो. के. आर. परमशिवम की 28 मार्च की रात्रि उग्रवादियों द्वारा नृशंसापूर्ण हत्या के दूरदर्शन एवं रेडियो प्राप्त समाचार से शोकाकुल कार्यकर्ताओं ने शोक सभाएं आयोजित की और अपनी शोक संवेदना व्यक्त की। तथा इस शोक संवेदना को विभिन्न समाचार पत्रों के माध्यम से

अभिव्यक्त किया है। काशी प्रांत के समस्त कार्यकर्ताओं की यह सहज अभिव्यक्ति है कि प्रो. परमशिवम का बलिदान न केवल तमिलनाडु में अपितु संपूर्ण भारत में राष्ट्रवादी युवाशक्ति तन, मन, जीवन, समर्पित कर मातृभूमि की सेवा की प्रेरणा देगा।

वाराणसी महानगर में इस हत्या के विरोध में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, यू. पी. कालेज, हरिश्चंद्र महाविद्यालय, इकाई के कार्यकर्ताओं ने जुलूस निकाला। कार्यकर्ताओं ने गोदौलिया चौराहे पर मुख्यमंत्री करुणानिधि का पुतला फूँका और सभा की।

सभा को संबोधित करते हुए विद्यार्थी परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष डा. रजनीश

शुक्ला ने कहा कि जहां एक तरफ संपूर्ण देश भारतीय नववर्ष मना रहा था उस समय 'मुसलिम प्रोटेक्शन फोर्स' के आतंकवादियों द्वारा राष्ट्रवादी संगठन अभावपि के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रो. परम-शिवम की नृशंस हत्या करना यह बता रहा है कि तमिलनाडु में राष्ट्रद्रोही तत्वों का जमघट हो गया है। केंद्रीय गुप्तचरों द्वारा तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि को बार-बार सतर्क करने के बावजूद जगह-जगह से आर. डी. एक्स एवं जिलेटिन बरामद होना यह दर्शाता है कि पूरा तमिलनाडु कट्टर मुस्लिम उग्रवादियों के चंगुल में फँस गया है।

लखनऊ विश्वविद्यालय, विधान्त डिग्री कालेज व के. के. सी. कालेज में पुतला दहन किया और द्रमुख सरकार बर्खास्त करने की मांग की।

कानपुर, मेरठ, आगरा, रायबरेली, बाराबंकी, झांसी, जौनपुर, बलिया, मिर्जापुर, मधुरा, अलीगढ़, सहारनपुर, गोरखपुर आदि शहरों में धरना, विरोध प्रदर्शन व पुतला दहन किया गया। सी. बी. आई. द्वारा जांच और द्रमुख सरकार के इस्तीफे की मांगें उठायी गयीं।

उत्तर प्रदेश जैसे ही देश के लगभग सभी प्रांतों में विरोध प्रदर्शन हुए। दिल्ली में तमिलनाडु भवन के सामने प्रदर्शन किया गया। कलकत्ता (प. बंग.) में भी तमिलनाडु भवन के सामने प्रदर्शन हुआ और मुस्लिम आतंकवाद का पुतला जलाया गया।

28 अप्रैल पूरे देश में 'इस्लाम आतंकवाद विरोधी दिवस' के रूप में मनाया गया। इस संदर्भ में विरोध प्रदर्शन धरना, जुलूस, पुतला दहन आदि प्रकार के कुल 156 कार्यक्रम देश के अलग अलग स्थान पर हुए।

With Best Compliments



A Well Wisher

“ Sorry ”

Due to unavoidable circumstances we are not able to print Perspective in this issue.

-Editor

Dear Readers.

We invite you to send in your contributions. They could be in any form, letters, short articles, news and even poetry, either in Hindi or English language. Please ensure that you write clear hand/typed, on one side of a sheet. Looking forward to your reactions then!

-Editor

TITANIC CREATES CINEMATIC HISTORY

On the fateful night of April 12, 1914, the H.M.S. Titanic, a British passenger liner and the largest ship in the world when she was built, struck an iceberg in the North Atlantic on her maiden voyage and sank with the loss of 490 lives. This greatest maritime disaster of all times, spawned several myths and fantasies, some of them survive and continue to haunt us even today. The hopeless romanticism associated with the mysterious circumstances in which the 'Titanic' sank has caught the imagination of many a Hollywood movie maker. Several movies were made on the theme of the disaster. The wreckage of the Titanic was raised by sophisticated machinery and an attempt was also made to reconstruct the ship as it stood then.

James Cameron, ace Hollywood director has cashed on this mystical appeal of the Titanic to make a superlative masterpiece which has broken all known box-office records. It has bagged eleven Academy Awards and how thus created history in the film world. The film begins with an underwater exploration project on the wreckage of the 'Titanic'. A search is on for the legendary Jewel Of The Ocean, a large uncut diamond dating back to the time of Louis XIV and believed to be the most expensive precious jewel ever discovered which was supposedly worn by a passenger on board the 'Titanic' on the fateful night of its sinking.

The crew receives a mysterious call from a woman who claims to be one of the survivors of the 'Titanic' disaster. The story unfolds with the narration of Rose, the only link to the legendary missing jewel....

Jack Dawson (Leonardo Dicaprio) is a vagabond who paints portraits for a living and manages to win a ticket on the Titanic in a poker bet. Rose (Kate Winslet) is a fiery young lady brought up in a Victorian atmosphere and engaged much against her wishes to a rich English businessman. Rose, who desperately wants to break free from the artificial world of the elite is yearning for a down to earth existence. She meets Jack on board the ship and hopelessly falls in love with him. With Jack, she learns to live life to the fullest, not merely to exist, which she had been doing all her life. She learns to be uninhibited, open and free in her expression. Their romance, fraught with hope and despair at the same time reaches a point where Rose finally breaks the chains of her puritan society and decides to flee to America with Jack to start life afresh.

Their plans however, are abruptly aborted as disaster strikes! The latter half of the film captures the stark brutality and the heart rending reality of the tragedy. The ship hits an iceberg and the lower decks start flooding. The ship keels over, and within an hour after striking the iceberg the unsinkable Titanic begins its ignominious journey to its

watery grave. Panic grips, hysteria takes over as people start running helter skelter for their lives. As the ship starts going down, a mad rush begins for a seat in the life boats. The lucky few escape, others die in the freezing sub-zero water. Realizing the grim reality, the captain of the ship stoically locks himself in the cabin and prepares to meet his Maker still clutching the wheel of the ship. The pathos and agony of the situation is etched indelibly on the mind of the viewer.

Here Jack and Rose desperately struggle to survive the harrowing ordeal. The climax of the film tugs at the heartstrings of the viewers. It is no mean achievement to create the full impact of the tragedy, shock and trauma of the disaster on a screen, and director James Cameron deserves all the credit for this 'Titanic' effort. The on screen chemistry between the lead pair creates magic on the screen. The musical score is simply scintillating. After breaking all possible records the Titanic is now going full stream to be a milestone in the history of cinema.

- CHAKSHU

WE WELCOME YEARLY
Subscription FEES Rs.20/-
(TWENTY) by DEMAND DRAFT/
MONEY ORDER IN NAME of
CHHATRASHAKTI, 3, MARBLE
ARCH, S. B. MARG, MAHIM,
Mumbai-400 016.

Printed & Published by : Shri. Shekhar Chandratre, Chhatrashakti, 3, Marble Arch, Senapati Bapat Marg, Mahim, Mumbai - 400 016. Printed at Shrirang Printers Pvt. Ltd., B/4, Shriram Industrial Estate, G. D. Ambekar Marg, Wadala, Mumbai - 400 031.